>

Title: Need to take urgent measures to correct sex ratio imbalance in the country.

श्रीमती उर्षा वर्मा (हरदोई): पन्द्रहवीं जनगणना से कई महत्वपूर्ण जानकारी निकली हैं। महिलाओं के लिंगानुपात में जो अंतर 2001 की जनगणना में सामने आई थी वह अब भी बढ़ रही है। 2001 के जनगणना में पुरूष 53.22 और महिलाएं 49.65 करोड थीं यानी 3.57 करोड महिलाएं कम थीं। वर्ष 2011 की जनगणना में पुरूष 62.37 और महिलाएं 58.65 करोड हैं यानी महिलाओं की आबादी पुरूषों से 3.72 करोड कम है और लिंगानुपात का अंतर निरंतर बढ़ रहा है।

केरल पांडिचेरी और तमिलनाडु तीन ऐसे राज्य हैं जहां महिलाओं की आबादी संतोषजनक है। देश के बाकी राज्यों में स्थिति चिन्ताजनक है। लिंगानुपात इंगित करता है कि भ्रूण गर्भपात और जन्म के बाद नवजात बच्चियों की हत्या हो रही है।

आंकड़ों से प्रसव पूर्व गर्भ निर्धारण रोकने वाले पीएनडीटी कानून और सरकार द्वारा लिंगानुपात सुधार विभिन्न कार्यक्रमों के औचित्य पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

मेरा आग्रह है कि लिंगानुपात के अंतर को समाप्त करने हेतु सरकार अविलम्ब आवश्यक कदम उठाए जिससे भविष्य में महिलाओं ने लिंगानुपात में सुधार हो सके।